Maa Kalratri: मंत्र, प्रार्थना, स्तुति, ध्यान, स्तोत्र, कवच और आरती

Maa Kalratri का ध्यान

करालवन्दना घोरां मुक्तकेशी चतुर्भुजाम्।
कालरात्रिम् करालिंका दिव्याम् विद्युतमाला विभूषिताम्॥

दिव्यम् लौहवज्र खड्ग वामोघोर्ध्व कराम्बुजाम्।
अभयम् वरदाम् चैव दक्षिणोध्वाघः पार्णिकाम् मम्॥

महामेघ प्रभाम् श्यामाम् तक्षा चैव गर्दभारूढ़ा।
घोरदंश कारालास्यां पीनोन्नत पयोधराम्॥

सुख पप्रसन्न वदना स्मेरान्न सरोरूहाम्।
एवम् सचियन्तयेत् कालरात्रिम् सर्वकाम् समृध्दिदाम्॥

Karalavandana Ghoram Muktakeshi Chaturbhujam।
Kalaratrim Karalimka Divyam Vidyutamala Vibhushitam॥

Divyam Lauhavajra Khadga Vamoghordhva Karambujam।
Abhayam Varadam Chaiva Dakshinodhvaghah Parnikam Mam॥

Mahamegha Prabham Shyamam Taksha Chaiva Gardabharudha।
Ghoradamsha Karalasyam Pinonnata Payodharam॥

Sukha Prasanna Vadana Smeranna Saroruham।
Evam Sachiyantayet Kalaratrim Sarvakam Samriddhidam॥

Maa Kalratri का स्तोत्र

हीं कालरात्रि श्रीं कराली च क्लीं कल्याणी कलावती।
कालमाता कलिदर्पध्नी कमदीश कुपान्विता॥

कामबीजजपान्दा कमबीजस्वरूपिणी।
कुमतिघ्नी कुलीनर्तिनाशिनी कुल कामिनी॥

क्लीं ह्रीं श्रीं मन्त्रवर्णेन कालकण्टकघातिनी।
कृपामयी कृपाधारा कृपापारा कृपागमा॥

Him Kalaratri Shrim Karali Cha Klim Kalyani Kalawati।
Kalamata Kalidarpadhni Kamadisha Kupanvita॥

eAstroHelp

Kamabijajapanda Kamabijaswarupini।
Kumatighni Kulinartinashini Kula Kamini॥

Klim Hrim Shrim Mantrvarnena
Kalakantakaghatini।
Kripamayi Kripadhara Kripapara Kripagama॥

Maa Kalratri का कवच

ऊँ क्लीं मे हृदयम् पातु पादौ श्रीकालरात्रि।
ललाटे सततम् पातु तुष्टग्रह निवारिणी॥

रसनाम् पातु कौमारी, भैरवी चक्षुषोर्भम।
कटौ पृष्ठे महेशानी, कर्णोशङ्करभामिनी॥

वर्जितानी तू स्थानाभि यानि च कवचेन हि।
तानि सर्वाणि मे देवीसततंपातु स्तम्भिनी॥

Om Klim Me Hridayam Patu Padau
Shrikalaratri।
Lalate Satatam Patu Tushtagraha Nivarini॥

Rasanam Patu Kaumari, Bhairavi
Chakshushorbhama।
Katau Prishthe Maheshani,
Karnoshankarabhamini॥
t
Varjitani Tu Sthanabhi Yani Cha Kavachena
Hi।
Tani Sarvani Me Devisatatampatu
Stambhini॥

Maa Kalratri की आरती

कालरात्रि जय जय महाकाली। काल के मुंह से बचाने वाली॥
दुष्ट संघारक नाम तुम्हारा। महाचंडी तेरा अवतारा॥
पृथ्वी और आकाश पे सारा। महाकाली है तेरा पसारा॥
खड्ग खप्पर रखने वाली। दुष्टों का लहू चखने वाली॥
कलकत्ता स्थान तुम्हारा। सब जगह देखूं तेरा नजारा॥
सभी देवता सब नर-नारी। गावें स्तुति सभी तुम्हारी॥
रक्तदन्ता और अन्नपूर्णा। कृपा करे तो कोई भी दुःख ना॥
ना कोई चिंता रहे ना बीमारी। ना कोई गम ना संकट भारी॥
उस पर कभी कष्ट ना आवे। महाकाली माँ जिसे बचावे॥
तू भी भक्त प्रेम से कह। कालरात्रि माँ तेरी जय॥

eAstroHelp